MT

Seat No. | | | | | | | |

2018 1100

MT - HINDI (COMPOSITE) (SECOND OR THIRD LANGUAGE) (H) - SEMI PRELIM - I - PAPER - I

Time : 2 Hours **Preliminary Model Answer Paper** **Max. Marks : 50**

विभाग 1 - गद्य

उ. 1. (क) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

(1) संजाल पूर्ण कीजिए। **2**

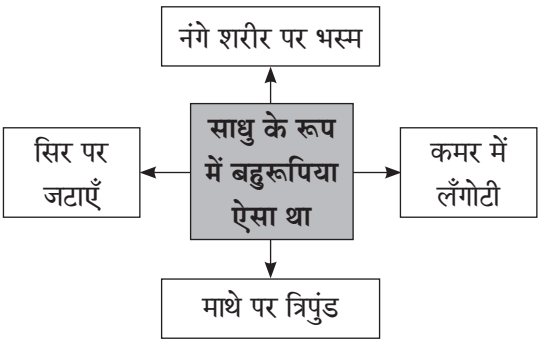

(2) (i) **वचन बदलिए।** **1**

(I) डेरा - डेरे (II) झोपड़ी - झोपड़ियाँ

(ii) **निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग छाँटकर लिखिए।** **1**

(I) महा (II) उप

(3) भारत में हिंदू साधुओं का एक विशेष पहनावा होता है। भारतीय संस्कृति की परंपरा के अनुसार ये माला, जटा, त्रिपुंड, कमंडल, तिलक, भस्म आदि का प्रयोग करके स्वयं को संसारत्यागी कहलवाते हैं। हिंदू समाज में तुलसी की माला का विशेष महत्त्व होता है। अत: साधुओं के हाथ व गले में माला होती है। जटा, भस्म व कमंडल का सीधा संबंध भगवान शिव से होता है। भगवान शिव अपने शरीर पर भस्म लगाते थे। हिंदू संप्रदाय में तिलक का भी अपना विशेष महत्त्व होता है। धार्मिक कार्य एवं ईश्वर की उपासना करने के पश्चात माथे पर तिलक लगाया जाता है। माला, जटा, त्रिपुंड, कमंडल, तिलक, भस्म आदि का आध्यात्मिक महत्त्व भी है। इनके प्रयोग से व्यक्ति शुद्ध आचरण करने लगता है। अत: साधु उपर्युक्त साधनों को धारण करते हैं। **2**

उ. 1. (ख) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

(1) (i) **समझकर लिखिए।** **1**

(ii) **उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।** **1**

(I) सुंदरता के लिए **नजरिया** सबसे पहली अवस्था है।

(II) सुंदरता की **पहली** अवस्था सत्य है।

(2) (i) **निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलिए।** **1**

(I) कल्पना - कल्पनाएँ (II) लकीर - लकीरें

(ii) **गद्यांश में प्रयुक्त अन्य भाषाओं के शब्द ढूँढ़कर लिखिए।** **1**

(I) रूहानी (II) कैनवस

(3) रंगों का व्यक्ति के जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। रंग चेतन जीव पर गहराई तक असर डालते हैं। रंग व्यक्ति को सिर्फ खुशी ही नहीं देते बल्कि उसके शारीरिक एवं मानसिक विकारों को भी दूर भगाते हैं। रंग व्यक्ति के जीवन में दोहरी भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के तौर पर रंग हमें उत्तेजित करते हैं और हमें शांत भी करते हैं। इसलिए जीवन में रंगों का ज्योतिषीय महत्त्व है। रंगों के बिना व्यक्ति का जीवन नीरस होता है। इंद्रधनुष के सात रंगों को रंगों का रचयिता माना जाता है। हरा रंग संपन्नता का प्रतीक माना जाता है। श्वेत रंग शांति का प्रतीक माना जाता है। पीला रंग प्रकाश का प्रतीक माना जाता है, तो गुलाबी रंग कोमलता व सुंदरता का प्रतीक माना जाता है। नीला रंग एकता व ठंडक का प्रतीक माना जाता है। रंग हमारे विचारों को प्रभावित करते हैं। इसलिए हमारे जीवन में रंगों का विशेष महत्त्व है। **2**

विभाग 2 - पद्य

उ. 2. (अ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

(1) **संजाल पूर्ण कीजिए।** **2**

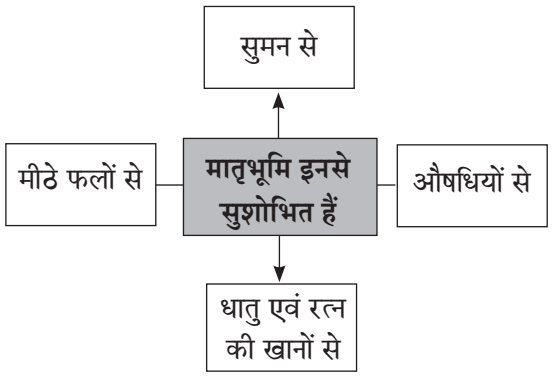

(2) **अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए।** **1**

(i) सुखद (ii) धरा

(3) प्रकृति से प्राप्त संसाधनों को प्राकृतिक संसाधन कहा जाता है। हवा, पानी, खनिज, लकड़ी, मिट्टी, तेल, वनस्पति, जीवाश्म ईंधन व ऊर्जा आदि प्राकृतिक संसाधनों के उदाहरण हैं। हमें प्राकृतिक का इस्तेमाल सोच-समझकर ही करना चाहिए। उन्हें व्यर्थ में बरबाद करने से आगे चलकर मनुष्य जीवन ही खतरे में पड़ सकता है। सभ्यता के इस युग में लोगों ने अपनी आँखे बंद करके प्राकृतिक संसाधनों का अमर्यादित दोहन करना शुरू कर दिया है। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई हो रही है। पेड़ों की कटाई के विपरीत प्रभाव के कारण प्रदूषण एवं वर्षा की कमी हो रही है। इसलिए जीवन को संभव बनाना है, तो हमें धरती पर उपलब्ध संसाधनों का उचित उपयोग करना होगा। **2**

उ. 2. (आ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

(1) (i) **समझकर लिखिए।** ½

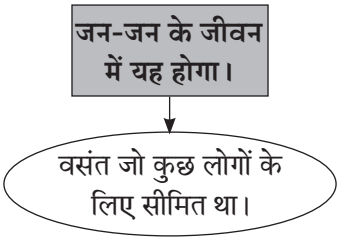

(ii) **निम्नलिखित शब्द पढ़कर ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्न शब्द हों -** ½
भू पर अभिनव क्या बनेगा ?

(iii) **निम्नलिखित विधान सत्य है या असत्य लिखिए।** 1
(I) सत्य (II) असत्य

(2) **निम्नलिखित शब्द से उपसर्ग अलग कीजिए और संबंधित उपसर्ग से अन्य दो शब्द तैयार कीजिए।** 1
उपसर्ग : अभि, **अन्य शब्द** : अभिनेता, अभिजीत

(3) धरती पर जीवन का स्पंदन है। यह धरती आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सौगात है। इसे सुंदर व स्वच्छ रखना मेरा परम कर्तव्य है। इस धरती को स्वर्ग के जैसा सुंदर बनाने के लिए मैं पेड़-पौधे लगाऊँगा। धरती को सदैव हरित रखूँगा। यहाँ-वहाँ कूड़ा-कचरा नहीं फेकूँगा। जल स्रोतों को दूषित होने से बचाऊँगा। पर्यावरण का संतुलन बनाए रखने के लिए वन एवं वन्य जीवों का संरक्षण करूँगा। सर्वत्र शांति का वातावरण बनाए रखूँगा। प्राकृतिक स्रोतों का सोच-समझकर उपयोग करूँगा। पर्यावरण प्रदूषण एवं ग्लोबल वार्मिंग को नियंत्रित करने वाले संभव प्रयासों का कड़ाई से पालन करूँगा। बिजली एवं पानी का जरूरत से ज्यादा उपयोग नहीं करूँगा। मानवीय मूल्यों का प्रचार एवं प्रसार करके सभी के मन में एक-दूसरे के प्रति एवं धरती के प्रति मानवीय संवेदना उत्पन्न करने की कोशिश करूँगा। 2

विभाग 3 - व्याकरण विभाग

उ. 3. सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

(1) **निम्नलिखित शब्दों का मानकवर्तनी के अनुसार शुद्ध शब्द छाँटकर कीजिए ।** 1
(i) बुद्धि (ii) परीक्षार्थी

(2) **निम्नलिखित अव्यय शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** 1
इसलिए : वह बीमार है इसलिए आज स्कूल नहीं गया।

(3) (i) **सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए।** 1
मुझे अभिवादन का ध्यान आया था।

(ii) **निम्नलिखित वाक्यों के काल पहचानकर लिखिए।** 1
अपूर्ण भूतकाल

(4) (i) **निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ लिखकर सार्थक वाक्यों में प्रयोग कीजिए।** 1
खाली हाथ लौटना - निराश होकर वापस आना।
वाक्य - लंदन गोलमेज परिषद किसी भी नतीजे पर नहीं पहुँच सका इसलिए गांधीजी को **खाली हाथ लौटना पड़ा।**

(ii) **निम्नलिखित वाक्यों के अधोरेखांकित शब्दसमूह के लिए कोष्ठक में दिए मुहावरों में से उचित मुहावरे का चयन करके वाक्य फिर से लिखिए।** 1
सरकस की गुड़ियों के करतब देखकर दर्शक **दंग रह गए।**

(5) (i) **निम्नलिखित संधि विच्छेद की संधि कीजिए और भेद लिखिए।** **1**

व्यंजन संधि

(ii) **निम्नलिखित शब्दों का विच्छेद कीजिए और भेद संधि लिखिए।** **1**

स्वागत - सु + आगत = स्वर संधि

(6) (i) **रचना की दृष्टि से वाक्य के प्रकार बताइए।** **1**

सरल वाक्य

(ii) **निम्नलिखित वाक्यों के अर्थ के अनुसार भेद लिखिए।** **1**

आज्ञार्थक वाक्य

विभाग 4 - रचना विभाग

उ. 4. **(अ)** **4**

(i)

दिनांक : ४ अप्रैल २०१८

प्रति,

श्री व्यवस्थापकजी,

स्टूडेंट्स फ्रेंड्स,

मुंबई - ४०० ०२८।

विषय : पुस्तकालय के लिए पुस्तकें मँगवाना।

माननीय महोदय,

हमें अपने पुस्तकालय के लिए निम्नलिखित पुस्तकों की आवश्यकता है। यह पत्र प्राप्त होते ही ये पुस्तकें ऊपर लिखे पते पर वी.पी.पी. द्वारा भेजने की कृपा करें। आपके नियमों के अनुसार पेशगी के रूप में दो सौ रुपए का पोस्टल ऑर्डर इस पत्र के साथ भेजा जा रहा है। शेष रकम की वी.पी.पी. यहाँ पहुँचते ही छुड़ा ली जाएगी।

क्र.	पुस्तकों के नाम	लेखक	प्रतियाँ
(१)	बेगम का तकिया	पं. आनंदकुमार	२
(२)	राबिया	पं. आनंदकुमार	३
(३)	चंद्रगुप्त	जयशंकर 'प्रसाद'	५
(४)	चंद्रगुप्त-समीक्षा	डॉ. श्रीहरि	५
(५)	रसलीन और उनका काव्य	डॉ. रामसागर सिंह	२
(६)	इंद्रधनुष	रवींद्र गुप्त	५

उपर्युक्त पुस्तकों के अलावा आप के पास अन्य नई किताबों की या पत्र-पत्रिकाओं की सूची होंगी, तो वह हमें अवश्य भेज देना। आशा करता हूँ कि आप उपर्युक्त पुस्तकें जल्द-से-जल्द भेजने की व्यवस्था करेंगे।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

धन्यवाद!

भवदीया,

कल्याणी कंदलगाँवकर

ए-२, अपर्णा वैभव,

दादर (पश्चिम),

मुंबई - ४०० ०२८।

ई-मेल आईडी : kalyanik93@gmail.com

अथवा

(ii) दिनांक - २० दिसंबर, २०१७

प्रिय इंदुभूषण

स्नेह!

१ जनवरी, २०१८ से शुरू होने वाला यह नया वर्ष तुम्हारे जीवन में सुख-समृद्धि की वर्षा करें। तुम्हारा जीवन खुशियों से भर जाए। मेरी शुभकामना स्वीकार करो।

धन्यवाद!

तुम्हारी,

कृतिका वर्मा

नाम : कृतिका वर्मा

पता : १८२ निर्मल पार्क,
गाँधी नगर, लखनऊ
ई-मेल आईडी : krutika123@gmail.com

उ. 4. (अ)

(i) **मुद्दों के आधार पर कहानी लेखन कीजिए।** **4**

मेल-मिलाप

रामपुर नामक गाँव में घनश्याम नाम का एक जौहरी रहता था। वह अपने दाहिने हाथ की एक ऊँगली में सोने की एक अँगूठी पहनता था। उसे उस अँगूठी से बेहद लगाव था। अत:कभी-भी वह उसे अपनी ऊँगली से अलग नहीं करता था। वह अपने परिवार से अलग रहता था। उनके लिए अलग घर कीव्यवस्था थी। वह उन्हें मिलने कभी नहीं जाता था।

एक दिन जौहरी को मिलने के लिए पड़ोस के गाँव से एकव्यक्ति आया। उसके पास एक थैली थी। उस थैली में एक घोड़े की तस्वीर थी । उस तस्वीर को बाहर निकालकर उसनेजौहरी से कहा, ''मालिक, यह बहुत ही अद्‌भुत तस्वीर है। यह मुझे साधु महाराज ने दी है। मैं इसे बेचना चाहता हूँ।जो कोई इस तस्वीर को खरीद लेगा उसका पूरा जीवन बड़े आराम से कटेगा और उसे किसी भी प्रकार की विपत्तियों का सामना नहीं करना पड़ेगा। उस व्यक्ति की बातें सुनकर जौहरी ने जिज्ञासा से पूछा, ''तो फिर इसका मूल्य कितना है?'' उस व्यक्ति ने बताया सिर्फ पाँच जल की बूँदे और वह भी वे बूँदें एक दूसरी से अलग होनी चाहिए यानी एक साथ मिलनी नहीं चाहिए। यह सुनकर जौहरी हैरान रह गया। थोड़ी देर तक सोचने के बाद उसने तुरंत अपने नौकर के जरिए एक गिलास में पानी मँगवाया। उसने एक प्लेट में पानी की बूँद गिराने की कोशिश की, पर उसके प्रयत्न निष्फल रहे क्योंकि पानी की बूँदें एक-दूसर से मिलने लगी। कई बार कोशिश करने के बाद जौहरी थक गया। वह व्यक्ति मन ही मन हँस रहा था। हैरान होकर जौहरी ने उसकी ओर देखा। तब तपाक से उस व्यक्ति ने कहा, ''एक-दूसरे के साथ मिलना तो बूँदों का स्वभाव है। फिर इंसान होकर तुम क्यों अपने परिवार वालों से अलग रहते हो?'''' उस आदमी की बातें सुनकर जौहरी की आँखें खुल गई और वह तुरंत अपने परिवार वालों के पास चला गया।

सीख : हमें जीवन में मेल-मिलाप से रहना चाहिए।

अथवा

(ii) (I) कोढ़ियों की सेवा कौन करती थी? **4**
(II) परदुखकातर व निर्मल हृदय वाले लोगों के नाम बताइए।
(III) गद्यांश में कौन-सी संस्था का उल्लेख हुआ है?
(IV) लेखक के शब्दकोश में कौन-से शब्द नहीं है?

उ. 5. (अ) **विज्ञापन लेखन :** **4**

टॉप मॉडल की घड़ियाँ

सबको पीछे छोड़े
मेरी प्यारी घड़ी देखो
'टाइटन' रिश्ता जोड़े।

घड़ियों में घड़ी 'टाइटन' घड़ी !!!
बहुत ही न्यारी और बहुत ही प्यारी !!!

विशेषताएँ

* दो साल की गारंटी
* अलग-अलग रंगों में उपलब्ध
* तरह-तरह के मॉडल्स
* दाम किफायती

उपयोगिता

* दिन रात चलना
* कभी न थकना
* कभी न बिगड़ना

संपर्क

न्यु वॉच कंपनी
स्टेशन रोड, दादर (पूर्व), मुंबई - १४
दूरध्वनि : ९८४५६७८९३३

उ. 5. (i) **(आ) निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर ६० से ८० शब्द में निबंध लिखिए ।** **6**

यदि मैं शिक्षा मंत्री होता.....

जीवन में शिक्षा का अत्यधिक महत्त्व है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति का मानसिक, सामाजिक, बौद्धिक व आर्थिक विकास होता है। शिक्षा मंत्रालय द्वारा देश के पाठ्यक्रम एवं शिक्षा प्रणाली पर ध्यान रखा जाता है। शिक्षा मंत्री शिक्षा मंत्रालय के प्रमुख होते हैं। देश में शिक्षा प्रणाली सुचारू रूप से कार्यान्वित हो रही है या नहीं, इस पर ध्यान एवं नियंत्रण रखने का कार्य शिक्षा मंत्री करते हैं। सचमुच शिक्षा मंत्री एक बहुत बड़ा महत्त्वपूर्ण पद है।

मैं भी भविष्य में बड़ा होकर देश का शिक्षा मंत्री बनना चाहता हूँ। जब मैं शिक्षा मंत्री बनूँगा; तब मैं संपूर्ण देश में शिक्षा का कार्य सुचारू रूप से हो रहा है या नहीं इस पर ध्यान रखूँगा। देश की संपूर्ण शिक्षा प्रणाली में एकरूपता लाने हेतु में सभी शिक्षा मंडलों का एकीकरण करूँगा; जिससे देश में एक ही प्रकार की शिक्षा प्रणाली सभी के लिए उपलब्ध हो सके।

आज कई स्कूल एवं महाविद्यालयों की हालत बहुत ही दयनीय है। कई स्कूलों में संसाधनों की कमी है। कई स्कूलों में छात्रों को बैठने के लिए कुर्सियाँ तथा पर्याप्त शैक्षणिक साधन भी नहीं है। कई स्कूलों में पर्याप्त मात्रा में शिक्षक उपलब्ध नहीं हैं। इन सारी समस्याओं को तुरंत सुलझाने के लिए मैं शिक्षा मंत्री होने के नाते एक समिति की स्थापना करूँगा। इससे किसी भी नगर या गाँव का छात्र शिक्षा के मूलभूत अधिकारों से वंचित नहीं रह पाएगा।

संपूर्ण देश के पाठ्यक्रम में मैं समयानुसार परिवर्तन करने हेतु विद्वान सदस्यों की एक समिति गठित करूँगा; ताकि भूमंडलीकरण एवं विज्ञान-तकनीकी के इस युग में भारतीय छात्र आगे ही आगे बढ़ सकें।

आज हमारे देश में शिक्षकों को दिया जाने वाला वेतन बहुत ही कम है। इसके लिए मैं शिक्षकों के लिए एक नए वेतनमान प्रणाली की शुरुआत करूँगा, जिससे अच्छे से अच्छे उम्मीदवार शिक्षा क्षेत्र से जुड़कर ज्ञान के प्रचार-प्रसार का पवित्र कार्य करने के लिए आगे आ सकें।

अब तो बस, यही मेरा ध्येय है। इसे साकार करने के लिए सर्वप्रथम मुझे मन लगाकर पढ़ना होगा। फिर मैं अपने विचारों को वास्तविक रूप में परिवर्तित कर सकता हूँ।

(ii)

सादा जीवन, उच्च विचार **6**

आज के जमाने में बाहरी तड़क-भड़क, दिखावा और फैशन का बोलबाला है। जिधर भी नज़र डालें, उधर आडंबर दिखाई देते हैं। ऐसे समय में सादे जीवन और उच्च विचारों के प्रति आकर्षण कम हो जाना स्वाभाविक है। फिर भी यही एक आदर्श है जो हमें प्रमुखता से नीचे नहीं गिरने देगा। इस संदर्भ में निम्नलिखित पंक्तियाँ यथोचित है -

''सादा जीवन उच्च विचार, सफेद रंग बतलाता है।
सत्य, अहिंसा, भाईचारा का पाठ हमें सिखलता है।।''

सादा जीवन और उच्च विचार का आदर्श विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य है। सादगी से रहनेवाले विद्यार्थी अनेक बुराईयों से बच सकते हैं। संयम के कारण मन पर नियंत्रण बना रहता है। मन पर नियंत्रण रहने से विद्यार्थी के अंदर अनेक सद्गुणों का सहज विकास होता है। उसका आत्मविश्वास बढ़ता है। वह एक सुयोग्य नागरिक बनता है और आगे चलकर बड़े-बड़े काम कर सकता है। फिर वह स्वयं दूसरों के लिए आदर्श और उदाहरण स्वरूप बन जाता है।

संसार के सभी महापुरुषों ने सादा जीवन और उच्च विचार का उदाहरण प्रस्तुत किया है। महात्मा गांधी और स्वामी विवेकानंद ने अपनी सादगी और उच्च विचारों से देश और दुनिया की अनुपम सेवा की है। विश्व के किसी भी महान व्यक्ति ने शान और आडंबर की जिंदगी जीने पर जोर नहीं दिया, बल्कि वे इसकी बुराइयों की ओर ही सबका ध्यान आकृष्ट करते रहे हैं।

जिस व्यक्ति के मन में सादगी से जीवन जीने का विचार जाग जाता है, उसमें त्याग और परोपकार की वृत्ति स्वत: उत्पन्न हो जाती है। यदि उसके विचार ऊँचे हो, तो उसमें सहज ही तेजस्विता आ जाती है। इस प्रकार व्यक्ति अपने जीवनकाल में अनेक महान कार्य करता है और दूसरों को भी महान कार्य करने की प्रेरणा देता है। सादगीपूर्ण जीवन और उच्च विचारों का यही जादू है।

सादा जीवन अल्प व्यय-साध्य है। उसे चलाने के लिए किसी विशेष कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता। सादगी में सौंदर्य होता है और वह शरीर ही नहीं मन को भी सुंदर बना देता है। सुन्दर शरीर और शान्त मन ही उच्च विचार कर सकता है। इसलिए इन दोनों का आपस में घना संबंध है। यदि आप सफल एवं तनावमुक्त होना चाहते हैं तथा जीवन का फल प्राप्त करना चाहते हैं, तो 'सादा जीवन, उच्च विचार' के सिद्धांत को अपनाइए।

❖❖❖